# 23 फरवरी, 2024 को महासमाधि के इस शुभ दिन पर सहज योगियों के लिए श्री माताजी द्वारा निर्धारित पवित्र उद्देश्यों की पंक्तियों का पालन, समीक्षा और एहसास करना महत्वपूर्ण है।

## परम पूज्य श्री माताजी द्वारा निर्धारित उद्देश्य - द लाइफ इटरनल ट्रस्ट, मुंबई :

1. कुंडलिनी (सूक्ष्म शरीर को बनाने के बाद बची हुई चेतना) को सक्रिय करके उसकी जागृति द्वारा आध्यात्मिक उत्थान (spiritual evolution) की प्रक्रिया में तेजी लाना, जिससे अंततः आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होता है। आत्म-साक्षात्कार अर्थात दूसरा जन्म, जैसा कि बाइबल, कुरान, भारतीय शास्त्रों और दुनिया भर के महान प्राचीन पैगंबरों और ऋषियों द्वारा परिभाषित है।

2. ऊपर लिखे गए पैरा में वर्णित उत्थान (evolution) को "सहज योग" के माध्यम से प्राप्त करना, जो परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा विकसित ध्यान की सरल, आसान, तनाव-मुक्त विधि है। इस उद्देश्य के लिए ध्यान केंद्रों का आयोजन करना। यह सभी बाहरी मानवीय प्रयासों जैसे, कर्मकांडों, पूजाओं, प्रार्थनाओं, जाप, पठन, त्याग (यानी संन्यास), गुरू की पूजा या किसी अन्य शारीरिक अभिव्यक्ति के परे है।

3. इस प्रक्रिया के द्वारा, एक शून्य स्थिति में पहुंचना जहां एक व्यक्ति प्रयत्न-शैथिल्य हो कर परमात्मा के खेल को महसूस करने लगता है। अंततः उस चरण तक पहुंच जाता है जहां उसका अहम् (मैं) विलीन हो जाता है और वह सृष्टिकर्ता व उसकी सृष्टि के साथ एक हो जाता है।

4. सहज कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को "निर्विचार चेतना" का परिचय देना और उनके दिमाग को जागरूक करना, जिससे वह सूक्ष्मता (subtle) को समझ पाए। वह सूक्ष्मता, जो वर्तमान में उथले (gross) शब्दों, पुस्तकों और रुढ़िवादिता में खो गई है।

5. सभी मनुष्यों को उनके अंदर के केवल एक जीवंत मानवीय धर्म का परिचय देना, जो वर्तमान में निष्प्राण पड़ा है और बाहरी धर्म के आडंबरों और उपदेशों के नीचे छुपा हुआ है। इसके लिए परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी की इच्छानुसार आध्यात्मिक कार्यक्रम और यात्राओं का आयोजन करना।

6. परमात्मा की अनुकंपा के धरती पर आने का संदेश माताजी के आत्मसाक्षात्कारी शिष्यों की सहायता से जन जन तक पहुंचाना।

7. माताजी और उनके शिष्यों, जिन्होंने आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से अपनी सामूहिक चेतना विकसित की है, द्वारा रोग ठीक करने वाले दिव्य-स्पर्श का आशीर्वाद प्रदान करके लोगों की शारीरिक और मानसिक बीमारियां ठीक करना।

8. स्वयं के भीतर के वास्तविक आनंद का स्वाद प्रदान करना। माताजी द्वारा विकसित ध्यान की विभिन्न विधियों का अभ्यास करना और ध्यान शिविर आयोजित करना।

9. आत्म-साक्षात्कारी लोगों की एक नई पीढ़ी का निर्माण करना और ऐसे सभी साधकों को नकारात्मक शक्तियों से बचाने के लिए मातृत्व प्रेम की सुरक्षा प्रदान करना और उनके कुशल-क्षेम का ध्यान रखना।

10. साधकों की साधना हेतु उपयोग के लिए आश्रमों का निर्माण और संचालन करना और एक नए आयाम की रचनात्मकता (new dimensions of creativity) को व्यक्त करने वाली सभी गतिविधियों को बढ़ावा देना।

11. स्कूल, कॉलेजों, अन्य संस्थानों और समूहों में इस कार्य का प्रचार करना और बच्चों के लिए आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर स्कूल चलाना।

12. आचरण और सौंदर्य के सिद्धांतों (aesthetic) को सुधारने हेतु कला, संस्कृति और संगीत की प्रदर्शनियों और अन्य गतिविधियों का आयोजन करना, जो प्रेम और सौंदर्य की सर्वव्यापी भाषा (universal language) का उपयोग करती हैं। जिससे "अति-इंद्रीय" के रूप में जानी जाने वाली आंतरिक भावनाएं विकसित होकर सूक्ष्म संवेदनाएं जागृत करती हैं। इस संबंध में ईश्वर की भक्ति पर आधारित नृत्य और संगीत संस्थान भी खोलना।

13. साधकों के प्रेम के सर्वव्यापी नियमों को सिद्ध करने वाले आध्यात्मिक अनुभवों को प्रकाशित (publish) करके प्रेम की शक्ति का उपयोग घृणा पर विजय पाने के लिए करना। यह घृण ही युद्ध, विघटन और विनाश का कारण है।

14. भौतिक परिपूर्णता (saturation) व आध्यात्मिक रहस्य के बीच की दूरी को कम करना। यह दूरी भय, बेचैनी, अनिद्रा व तनाव पैदा करती है और वास्तविकता से पलायनवाद व दिखावटी सन्यास की ओर ले जाती है।

15. माताजी द्वारा सत्य का ज्ञान देने के लिए रचित पुस्तकों और साहित्य का प्रकाशन करना ताकि मानव जो विकास (evolution) में सबसे श्रेष्ठ जीव है, अपनी महिमा, गरिमा और स्वतंत्रता में ऊपर उठ सके।

16. माताजी द्वारा चैतन्यित साधारण दवाएं और तेल रोगियों को वितरित करना।

17. Life Eternal संस्थाओं की इच्छानुसार प्रदर्शन या चर्चा के द्वारा ब्रह्मांडीय शक्तियों की गतिविधियों की सही तस्वीर देने के लिए प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करना।

18. पुस्तकालयों के लिए माताजी और शिष्यों के मार्गदर्शन में पुस्तकों का संग्रह करना।

19. बीमारों, रोगियों आदि के लिए सेनेटोरिया, अस्पताल, नर्सिंग होम का निर्माण करना।

20. बड़े पैमाने पर सहज योग सामूहिकता की आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से आध्यात्मिकता के खिलाफ विनाशकारी ताकतों जैसे बुरी आत्माओं, सम्मोहन के पंथ, सिद्धियों और निर्दोषों के शोषण के लिए "धर्म" के उपयोग के विरुद्ध प्रतिकार करना।

21. रुढ़िवादिता और अज्ञानता से विभाजित सत्य के सभी असली साधकों को एकजुट करना ताकि सत्य युग का विनाश होने के बजाय, वह वर्तमान कलियुग (अंधकार के युग) के गर्भ से पैदा हो। इस महान कार्य को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर सामूहिक उत्थान (evolution) की आवश्यकता होगी, अतः इसके लिए सभी मानव-संसाधनों का उपयोग करना।

22. भारत के विभिन्न भागों और विदेशों में Life Eternal Institution के स्थानीय केन्द्रों को खोलना और संगठित करना।

जय श्री माताजी

सहज दर्शन प्रचार और प्रसार समिति
adlakhagk@gmail.com | +91 98712 78936
www.nirmaldham.org | www.sahajayogamumbai.org